अभ्यास (EXERCISE)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (Very Short Answer Type Questions)

1. शीत युद्ध का अर्थ बताइए। (*JAC*, 2010, *USEB*, 2010)
[उत्तर—दूसरे महायुद्ध के बाद संयुक्त राज्य अमरीका तथा सोवियत संघ के बीच तनावपूर्ण सम्बन्धों को शीत युद्ध का नाम दिया गया जो किसी समय गरम युद्ध में बदल सकता था।]

2. ट्रुमैन सिद्धान्त का क्या निहितार्थ था?
[उत्तर—सोवियत संघ के साम्यवादी विस्तारवाद को रोकने के लक्ष्य से राष्ट्रपति ट्रुमैन ने घोषित किया कि अमरीका स्वतन्त्र देशों की रक्षा करेगा।]

3. मार्शल योजना का क्या उद्देश्य था? (*CBSE*, 2012)
[उत्तर—यूरोप के देशों को वित्तीय सहायता देकर उनके आर्थिक पुनरुद्धार के माध्यम से वहाँ साम्यवादी विस्तारवाद को रोका जाए।]

4. मोलोटोव योजना का क्या उद्देश्य था?
[उत्तर—अमरीकी विदेश सचिव मार्शल की योजना के प्रत्युत्तर में सोवियत विदेश मन्त्री मोलोटोव ने योजना बनाई कि पूर्वी यूरोप के देशों को वित्तीय सहायता देकर उनका आर्थिक पुनरुद्धार किया जाए।]

5. गुट-निरपेक्षता का शुद्ध अर्थ बताइए। (*JAC*, 2012)
[उत्तर—दोनों महाशक्तियों के सैनिक गुटों में शामिल न होना, युद्ध या शीत युद्ध की निन्दा करना, अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति, सुरक्षा व सहयोग में योगदान देना।]

6. गुट-निरपेक्ष नीति की व्याख्या करें। (*JAC*, 2008, 12)
[उत्तर—शीत युद्ध के दौरान संसार सामान्यत: दो भागों में विभाजित हो गया—संयुक्त राज्य अमेरिका वाला पूँजीवादी गुट व सोवियत संघ के नेतृत्व वाला समाजवादी गुट। इस स्थिति में एशिया व अफ्रीका के नव-स्वतन्त्र राष्ट्रों ने अपनी राजनीतिक स्वतन्त्रता बनाये रखने व दोनों महाशक्तियों से आर्थिक तथा सैनिक लाभों को प्राप्त करने के लिए एक नवीन आन्दोलन को जन्म दिया जो गुट-निरपेक्ष आन्दोलन कहलाता है।]

7. विश्व व्यापार संगठन कब बना ? किसी एक ऐसे देश का नाम बताइए जिसने इस संगठन को अपने हितों के लिए इस्तेमाल किया। (*CBSE Delhi*, 2010)

अथवा

विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू. टी. ओ.) की स्थापना किस वर्ष की गई थी? (*USEB*, 2013)
[उत्तर—विश्व व्यापार संगठन की स्थापना सन् 1995 में हुई। यह संगठन 'जनरल एग्रीमेन्ट ऑन ट्रेड एण्ड टैरिफ' के उत्तराधिकारी के रूप में काम करता है। इस संगठन के नियम के मुताबिक इसके फैसले सदस्य देशों की सहमति के आधार पर लिये जायेंगे। परन्तु व्यवहारिक तौर पर अमरीका और यूरोपीय संघ जैसी बड़ी आर्थिक शक्तियाँ इसके नियमों को अपने हितों के अनुरूप मोड़ने में कामयाब रही है।
संयुक्त राज्य अमेरिका पर यह आरोप बहुतायत से लगता रहा है कि उसने इस संगठन को अपने हितों के लिए इस्तेमाल किया है।]

8. महाशक्तियाँ छोटे देशों के साथ गठबन्धन क्यों करती हैं ? (*JAC*, 2010)
[उत्तर—(i) छोटे देशों के महत्वपूर्ण प्राकृतिक साधनों का अपने हित के लिए प्रयोग करना।
(ii) छोटे देशों के भू-भाग को अपने सैनिक साधनों के रूप में प्रयोग करने के लिए।
(iii) युद्ध व युद्ध की सामग्री पर जो खर्चा होता था उसे छोटे देशों में बाँटकर अपने खर्च के बोझ को कम करने के लिए।]

9. पूँजीवादी गुट का नेतृत्व कौन सा देश कर रहा था? (*JAC*, 2011)
[उत्तर—पूँजीवादी गुट का नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका कर रहा था।]

10. उत्तरी अटलाँटिक सन्धि संगठन (नाटो) की स्थापना किस वर्ष हुई? (*USEB*, 2011)
[उत्तर—उत्तरी अटलाँटिक सन्धि संगठन या नाटो की स्थापना अप्रैल 1949 में हुई थी।]

11. शीत युद्ध महाशक्तियों के मध्य विचारधाराओं का एक युद्ध था। यह कथन सत्य है अथवा असत्य? (*USEB*, 2011)
[उत्तर—यह कथन सत्य है।]

12. उन दो राष्ट्रों के नाम लिखिये जिनकी प्रतिद्वन्द्विता शीतयुद्ध का कारण बनी। (*USEB*, 2013)
[उत्तर—(1) संयुक्त राज्य अमेरिका, (2) सोवियत संघ। इन दो राष्ट्रों की आपसी प्रतिद्वन्द्विता शीत युद्ध का कारण बनी।]

Scanned by CamScanner

3. पंचशील के सूत्रों का उल्लेख कीजिए। (*JAC*, 2009, 12; *USEB*, 2012; *BSEB*, 2012)

[**उत्तर**—1954 में भारत व चीन के बीच मित्रता व व्यापार की सन्धि हुई। इसकी प्रस्तावना में पाँच सूत्र रखे गये—एक-दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता व प्रभुसत्ता का सम्मान करना, किसी पर आक्रमण न करना, दूसरे के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करना, समानता व परस्पर लाभ तथा शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व। इसने भारत की विदेश नीति के भावार्थ को बिल्कुल स्पष्ट कर दिया।]

4. उत्तर-दक्षिण संवाद का क्या ध्येय था?

[**उत्तर**—सामान्यत: विश्व के धनी देश उत्तर में हैं, जबकि पिछड़े हुए या विकासशील देशों की बहुसंख्या दक्षिण में है। 1960 के बाद विकासशील देशों ने यह अभियान चलाया कि विकसित देशों का यह दायित्व है कि वे अविकसित व विकासशील देशों को वित्तीय सहायता व नयी प्रौद्योगिकी दें। 1973 में एल्जियर्स में गुट-निपरपेक्ष देशों का सम्मेलन हुआ जहाँ नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था लाने का प्रस्ताव पास हुआ। संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस नाते ब्रान्डट आयोग गठित किया जिसकी सिफारिशों पर चर्चा हुई। इसी को उत्तर-दक्षिण संवाद कहते हैं। खेद की बात है कि इस अभियान को सफलता न मिल सकी।]

5. सामूहिक आत्म-निर्भरता व दक्षिण-दक्षिण सहयोग का क्या अर्थ है?

[**उत्तर**—1960 के बाद उत्तर-दक्षिण संवाद चल पड़ा लेकिन पाश्चात्य विकसित देशों के विरोधी रुख के कारण उसे सफलता न मिल सकी। अत: 1980 के बाद विकासशील देशों ने यह अभियान चलाया कि वे परस्पर सहायता व सहयोग से अपना विकास करें। इसलिए 15 विकासशील देशों का गुट (G-15) बना। भारत ने इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभाई।]

6. द्विध्रुवीय विश्व की समाप्ति के बाद गुट-निरपेक्ष आन्दोलन की क्या प्रासंगिकता है ? (*CBSE, AI*, 2009)

[**उत्तर**—यह कहा जाता है कि उत्तर शीत युद्ध काल में गुट-निरपेक्ष आन्दोलन की कोई प्रासंगिकता नहीं है क्योंकि विरोधी महाशक्तियों के सैनिक गुट समाप्त हो चुके हैं लेकिन यह विचार ठीक नहीं है। गुट-निरपेक्ष आन्दोलन का ध्येय विश्व में शान्ति, सुरक्षा व सहयोग को सुनिश्चित करना है तथा नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था लाना है। जब तक यह लक्ष्य पूरा नहीं होता, तब तक गुट-निरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता बनी रहेगी। इसी आन्दोलन के माध्यम से तीसरी दुनिया के देश अपने को बड़ी पूँजीवादी शक्तियों के दबाव से बचा सकते हैं तथा अपनी स्वतन्त्र विदेश नीति का अनुकरण कर सकते हैं।]

7. 1970 के दशक में नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था अभियान का मूल्यांकन कीजिए। (*CBSE, AI*, 2009)

[**उत्तर**—तीसरी दुनिया के देश आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं जो अपने विकास कार्यों में संलग्न हैं। अत: उन्होंने संयुक्त राष्ट्र की महासभा में नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था लाने का अभियान चलाया। इसीलिए 1964 में व्यापार व विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन नामक मंच की स्थापना हुई। महासभा ने 1960-70 को पहला तथा 1970-80 को दूसरा विकास दशक घोषित किया। 1973 में ऐल्जियर्स के गुट-निरपेक्ष सम्मेलन में इस आशय का प्रस्ताव पास किया। तब महासभा ने 1974 में अपने विशेष अधिवेशन में राज्यों के आर्थिक अधिकारों व दायित्वों का चार्टर पास किया। इसमें कहा गया कि विकसित देशों का यह दायित्व है कि वे अविकसित व अल्प विकसित देशों की सहायता करें। इसी विषय पर 1980 में ब्राडंट कमीशन रिपोर्ट आई लेकिन खेद की बात है कि धनी व विकसित देशों के असहानुभूतिपूर्ण व्यवहार के कारण इस अभियान को सफलता न मिल सकी।]

Scanned by CamScanner

8. शीतयुद्ध के किसी दो सैन्य तत्वों का उल्लेख करो। *(CBSE, Delhi, 2010)*

[**उत्तर**—शीतयुद्ध के दो मुख्य सैन्य तत्व हैं—
(i) इसमें दो महाशक्तियों और उनके अपने-अपने गुट थे।
(ii) परस्पर विरोधी गुटों में शामिल देशों को एक प्रकार के संयम का परिचय देना था। इनको समझना था कि आपसी युद्ध में जोखिम है क्योंकि संभव है कि इसकी वजह से दो महाशक्तियों में युद्ध छिड़ जाये।]

9. निम्न कथन को सही करके पुन: लिखें—"NATO की हवाई सेना ने जिसे सोवियत संघ नेतृत्व दे रहा था, उसने चेकोस्लोवाकिया पर बमबारी की।" *(CBSE, O.D., 2010)*

[**उत्तर—सही कथन निम्न प्रकार होगा—NATO की हवाई सेना ने जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका नेतृत्व दे रहा था, उसने युगोस्लावियाई क्षेत्रों पर बमबारी की।**]

10. शीतयुद्ध के दौरान भारत ने कोई भी दोनों महाशक्तियों के साथ गठबन्धन क्यों नहीं किया ? *(CBSE, O.D., 2010)*

[**उत्तर**—शीतयुद्ध के दौरान भारत ने कोई भी दोनों महाशक्तियों के साथ गठबन्धन नहीं किया जिसके मूल में कई कारण थे। पहला, अगर भारत किसी एक गुट में शामिल हो जाता तो उसे अपनी स्वतन्त्र विदेश नीति में अनुचित हस्तक्षेप का शिकार होना पड़ता। दूसरा नवस्वतंत्र भारत को अपने विकास के लिए दोनों ही महाशक्तियों से सहायता की आवश्यकता थी। यदि वह किसी एक महाशक्ति के साथ गठबन्धन कर लेता तो उसे दूसरी महाशक्ति से किसी भी प्रकार की सहायता नहीं मिलती।]

11. 1960 में दो महाशक्तियों द्वारा किये गये किन्हीं दो समझौतों का उल्लेख करें। *(CBSE, O.D., 2010)*

[**उत्तर**—1960 के दशक के उत्तरार्द्ध में दोनों महाशक्तियों द्वारा कई महत्वपूर्ण समझौते किये गये जिनमें दो प्रमुख समझौते निम्न थे—(1) परमाणु परीक्षण प्रतिबन्ध सन्धि, (2) परमाणु प्रक्षेपास्त्र परिसीमन सन्धि (एण्टी बैलेस्टिक मिसाइल ट्रीटी)।]

12. निम्नलिखित में सबसे पहली से सबसे बाद की घटना को सही कालक्रमानुसार लिखिए—

(क) बाडुंगा सम्मेलन
(ख) पंचशील समझौता
(ग) भारत-चीन युद्ध
(घ) दलाई लामा को राजनीतिक शरण

[**उत्तर**—घटनाओं का सही कालक्रम निम्न प्रकार होगा—
(1) पंचशील समझौता (1954)
(2) बाडुंगा सम्मेलन
(3) दलाई लामा को राजनीतिक शरण
(4) भारत चीन युद्ध।]

13. द्वि-ध्रुवीय विश्व के प्रारम्भ से आप क्या समझते हैं ? *(JAC, 2012; BSEB, 2012)*

[**उत्तर—द्वि-ध्रुवीय विश्व का आरम्भ**—द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् ही सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका जो विश्व की दो महाशक्तियाँ थीं, के बीच अविश्वास की खाई बढ़ती चली गयी। दोनों महाशक्तियों के नेतृत्व में दुनिया दो गुटों के बीच बहुत स्पष्ट रूप से बँट गयी थी। **शीतयुद्ध के आरम्भ के साथ दोनों महाशक्तियों के नेतृत्व में विश्व के देशों के दो गुटों में बँट जाने को द्वि-ध्रुवीय विश्व का आरम्भ कहा गया।** यह विभाजन सबसे पहले यूरोप में देखा गया जहाँ पश्चिमी यूरोप ने अमरीकी गुट और पूर्वी यूरोप के देशों ने सोवियत संघ का साथ पकड़ा।]

14. सोवियत संघ के संघीय गणराज्यों की एक झलक दीजिए।

[**उत्तर—सोवियत संघ के संघीय गणराज्यों में शामिल थे**—एस्टोनिया, लताविया, लिथुआनिया, रूस, यूक्रेन और बेलारूस, कजाकिस्तान, ताजिकिस्तान, किर्गिजस्तान, उजबेकिस्तान आदि।]

15. सोवियत प्रणाली क्या है ? *(CBSE, Delhi, 2012)*

[**उत्तर—सोवियत प्रणाली**—समाजवादी सोवियत गणराज्य (यू.एस.एस.आरू) रूस में हुई। 1917 की समाजवादी क्रांति के बाद अस्तित्व में आया। यह क्रांति पूँजीवादी व्यवस्था के विरोध में हुई थी और समाजवाद के आदर्शों और समतामूलक समाज की जरूरत से प्रेरित थी।

क्रांति के पश्चात् समाजवादी सोवियत गणराज्य में निजी सम्पत्ति की संस्था को समाप्त करने और समाज को समानता के सिद्धान्त पर सचेत रूप से निर्मित करने के लिए जो विशिष्ट प्रणाली अपनायी थी उसे सोवियत प्रणाली कहा गया। सोवियत राजनीतिक प्रणाली की धुरी कम्युनिस्ट पार्टी थी। इसमें किसी अन्य राजनीतिक दल या विपक्ष के लिए जगह नहीं थी। अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध और राज्य के नियन्त्रण में थी।]

Scanned by CamScanner

16. प्रतिद्वन्द्विता की भावना शीतयुद्ध के लिए उत्तरदायी कैसे है ?

[उत्तर—प्रतिद्वन्द्विता की भावना शीतयुद्ध के लिए बहुत हद तक उत्तरदायी थी। दोनों ही महाशक्तियाँ नये राष्ट्रों को अपने खेमे में लाने, नये-नये आधुनिक युद्धास्त्रों को निर्मित करने तथा सामरिक महत्व के स्थानों पर प्रभुत्व कायम करने में एक-दूसरे को पीछे छोड़ देना चाहते थे। इस प्रतिस्पर्धा ने दोनों के बीच शंकाओं को और अधिक बढ़ावा दिया जिससे शीतयुद्ध को प्रोत्साहन मिला।]

17. सोवियत प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं ? (*CBSE Delhi*, 2012)

[उत्तर—**सोवियत प्रणाली की मुख्य विशेषतायें**—(1) यह निजी सम्पत्ति की संस्था को समाप्त करने तथा समता मूलक समाज की स्थापना की भावना से प्रेरित थी।

(2) इस प्रणाली की धुरी कम्युनिस्ट पार्टी थी। इसमें किसी अन्य राजनीतिक दल या विपक्ष के लिए जगह नहीं थी।

(3) इसमें अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध और राज्य के नियन्त्रण में थी।

(4) इस प्रणाली के द्वारा सोवियत संघ की सरकार ने अपने सभी नागरिकों के लिए एक न्यूनतम जीवन स्तर सुनिश्चित करने का प्रयास किया।]

18. गुटनिरपेक्षता से आप क्या समझते हैं ? (*USEB*, 2012)

अथवा

गुटनिरपेक्ष का शुद्ध अर्थ बताइये। (*JAC*, 2013)

[उत्तर—गुटनिरपेक्षता से आशय है विश्व राजनीति में महाशक्तियों के नेतृत्व में गठित गुटों से पृथक् रहना। गुटनिरपेक्षता की नीति में अपनी विदेशी नीति की स्वतन्त्रता को सुनिश्चित करने तथा अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप निर्णय लेने की परिस्थिति उपलब्ध कराने की संभावनायें देखी गयीं थीं। इसके मूल में निम्न विचार था—गुटीय राजनीति से दूर रहते हुये सभी से सहयोग।]

19. क्या गुटनिरपेक्षता एक नकारात्मक नीति है? (*BSEB*, 2011; *USEB*, 2012)

[उत्तर—गुटनिरपेक्षता को एक नकारात्मक नीति नहीं माना जा सकता। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् स्वतन्त्रता प्राप्त करने वाले गरीब और विकासशील देशों के समक्ष कई प्रकार की समस्यायें थीं। एक तरफ वे शक्तिशाली देशों के आश्रित बनकर उनके हितों की पूर्ति का साधन नहीं बनना चाहते थे, तो दूसरी तरफ इन देशों को शक्तिशाली देशों की सहायता की आवश्यकता भी थी। गुटनिरपेक्षता को अपनाकर इन देशों ने न सिर्फ अपनी विदेश नीति की स्वतन्त्रता को बनाये रखा वरन् विभिन्न शक्तिशाली देशों से सहायता भी प्राप्त की।]

20. मार्शल योजना क्या थी? (*BSEB*, 2011, 13; *JAC*, 2012)

[उत्तर—मार्शल योजना का तात्पर्य 5 जून, 1947 को तत्कालीन अमेरिकी विदेश मन्त्री मार्शल द्वारा घोषित योजना से है। इस योजना का लक्ष्य अमेरिका द्वारा यूरोप के उन राज्यों को वित्तीय सहायता देना था जो इसके लिए तैयार थे। अमेरिकी वित्तीय सहायता से इन राष्ट्रों को अपना पुनर्निर्माण करना था। सोवियत संघ ने इस योजना को अमेरिका का साम्राज्यवादी जाल कहकर उसकी आलोचना की। मार्शल योजना के कारण शीत युद्ध में और अधिक तेजी आयी।]

21. नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था से आप क्या समझते हैं? (*BSEB*, 2011, 12)

[उत्तर—वर्तमान विश्व में विभिन्न देशों के बीच भारी आर्थिक विषमताएँ हैं। एक तरफ आर्थिक दृष्टि से बहुत अधिक सम्पन्न विकसित देश हैं तो दूसरी तरफ भूख, गरीबी और बीमारी से ग्रस्त विकासशील देश। समय-समय पर इस बात पर जोर दिया गया है कि विश्व में ऐसी आर्थिक व्यवस्था स्थापित की जाये जिससे विश्व के विभिन्न देश आर्थिक रूप से सम्पन्न हो जायें।

अत: एक ऐसी वैश्विक आर्थिक व्यवस्था जिसमें विकसित देशों के साथ विकासशील देशों को भी पर्याप्त विकास के साधन उपलब्ध हों को हम नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था का नाम देते हैं।]

Scanned by CamScanner